झलकारी बाई कोरी/कोली

(22.11.1830 - 06.06.1857)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें, पढ़वाएं और नाट्य मंचन करवाएं)

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 22.11.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480

—: प्रथम दृश्य :—

(सेट लगा हुआ है...पीछे महाराजा कुर्सी रखी है...आगे बायीं तरफ एक चारपाई पड़ी है, उसके बगल में एक स्टूल/ब्लॉक रखा हुआ है। एक तरफ जनरल ह्यूरोज का Banner Stand लगा है। पीछे एक जाल पड़ा हुआ है....Front पर ऊपर बायें बाबासाहेब का पोस्टर लगा है....दायें झलकारीबाई का पोस्टर लगा है पुष्पांजली के लिये।

(सेट पर ढाल, तलवार, बन्दूक, झाड़ू रखी हुई है)

(झलकारी (अनामिका) का सेट पर प्रवेश....कमीज, पैन्ट, बूट, सेना के जैसे पहने हैं। ऐरोबिक्स, योगा का संगीत बजना शुरु हो जाता है, इसी संगीत की लय पर झलकारी ऐरोबिक्स, योगा, कसरत करना शुरु करती है, ये दिखाने का उद्देश्य दर्शकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना है। बीच—बीच में ढाल, तलवार, बन्दूक का भी उपयोग करती है। संगीत और लाईट धीमी होती है और थक कर चारपाई पर लेट कर सो जाती है।)

(अंधेरा होने के बाद लाईट सीधी जनरल ह्यूरोज के बैनर पर जाती है, जिससे रिकार्डेड आवाज़ निकलती है)

(रिकार्डेड आवाज़ : ''टुम घिर चुकी हो क्वीन'' डुल्हा जू को बुलाव, शिनाक्ट करवाओ...हू इज डिस, What...! जलकारीबाई कोरी, डिस इज नॉट क्वीन....डिस इज जलकारीबाई कोली, अमारे साट बहुत बरा डोका उआ है। क्वीन की आर्मी कमाण्डर... जलकारी कोरिन....ओह...दुल्हा जू.....!!)

(झलकारी सपना देख रही है, सपने में ही हड़बड़ा कर उठती है और हाथ में तलवार लेकर गुस्से में जनरल हयूरोज के पास खड़े दुल्हा जू को घूर रही है।)

झलकरी –''दुल्हा जू, तुझे देखकर मेरे आँखों में खून उतर आया है। मैं खुली होती तो तेरे जिस्म के इतने टुकड़े कर देती, कि उसे बटोरने वाला भी पैदा नहीं होता।

''अरे गद्दार, बेईमान, नमक हराम, दुल्हा जू, तूने अपने कुल पर, अपनी जात पर कलंक लगवा दिया। चंद सोने की मोहरों की खातिर तूने अपना ईमान बेच दिया। ठाकुर होकर भी तुमने झाँसी से दगा कर दिया। तुमसे तो लाख अच्छे हम कोरी निकले हैं। झाँसी की आन, बान और शान की खातिर हमने अपना सब कुछ लुटा दिया। तुमने झाँसी का भेद देकर अपनी मातृभूमि से गद्दारी की है। किले की सुरक्षा का तूने गुप्त भेद दिया, तुझे तो इन्सान कहते हुए भी मुझे शर्म आती है। छि! आ....थूऽऽ...।''

(दुल्हा जू के चेहरे पर थूक देती है।)

रानी को दिया वचन हमने अपना सब कुछ लुटा कर भी पूरा कर दिया। हमारी रानी किले से सुरक्षित निकल गई। तुमने किले को तहस–नहस करके क्या हासिल कर लिया। दुल्हा जू जैसे गद्दारों की गद्दारी भी तुम्हारे काम ना आ सकी। तुम जीत कर भी हार गए जनरल।

(झलकारी तलवार दिखाकर चिल्लाती है)

ये क्रांतिकारियों का खौलता हुआ खून है, जो चट्टानों का भी सीना फोड़ कर बाहर आकर फूटता है। मैंने ये लड़ाई अंग्रेजों से रियासत बचाने के लिये नहीं लड़ी। बस जज़्बा है देशप्रेम का...अपनी मातृभूमि की रक्षा का। इसीलिये मर्दों से भी आगे हैं, वंचित समाज की मर्दानियाँ।

हमारा कोरी समाज प्राचीन भारत के इतिहास का सबसे पुराना शासक समाज रहा है। हमें भी उन्हीं प्राचीन पुरखों का वंशज होने पर गर्व है। कोरी समाज उन्हीं महान् ''कोलों'' का वंशज है, जो सिंधु घाटी जैसी महान् प्राचीन सभ्यता के संस्थापक शासक हैं। पेड़ों से उतरकर, गुफाओं से निकलकर सबसे पहले कोल समाज के ही आदिम पुरखों ने झोपड़ियाँ बनाकर रहना सीखा। मानव इतिहास में पहली बार खेती बारी शुरु की, नदियों से पानी काट कर खेतों तक लाये, फसलों को सींचना शुरु किया। यानी कोरी समाज जल, जंगल और ज़मीन का वास्तविक वारिस है।

उस समय के कोली नागपूजा करते थे। यहीं वे नागवंशी थे, जिनके बीच महामानव तथागत बुद्ध का जन्म हुआ।

(बुद्धगं, धम्मगं, संघंगं शरणंगं गच्छामि की धुन या स्वर बजेगा)

इन्हीं नागवंशियों ने बौद्ध धम्म का प्रचार, प्रसार किया। बुद्ध के समय इन्हीं नागों के सात कुलों के अपने–अपने गणतंत्र थे :–

1) वैशाली के लिच्छवि ओर बाज्जी...

2) कुशीनारा और पावा के मल्ल...

3) अल्लिकप्प के बुलि...

4) पिपलीवन के मौर्य...

5) कपिलवस्तु के शाक्य....

6) रामगाम के कोलिये...

इनमें से शाक्य वंश बुद्ध का कुल है, और कोलिये वंश बुद्ध की माता महामाया का कुल है। इसीलिये कोली समाज को इस बात पर गर्व है कि उन्होंने, एक ऐसी महान माँ महामाया को पैदा किया...जिसने सम्पूर्ण विश्व के महानतम बेटे गौतम बुद्ध को जन्म दिया, जो आगे चलकर 'मेकर ऑफ द युनिवर्स' कहलाया।

जनरल, अब मुँह से बुद्ध का नाम निकल गया है, बुद्ध का मतलब शांति, तो तलवार का क्या काम...हम बिना तलवार के ही बहुत बहादुर हैं। (तलवार साईक की तरफ फेंक देती है) याद रखो जनरल, जब लड़ते–लड़ते थक जाओगे, तो तुम्हें भी बुद्ध की शरण में ही जाना पड़ेगा...और तू दुल्हा जू, जब कहीं मतलब की बात फँस जाती है, तब कहते हो, बुद्ध तो राजघराने के क्षत्रिय थे, हमारे थे, तो आ जाओ न बुद्ध की शरण में, किसने रोका है। ये भटकना बंद हो जायेगा। जनरल, आपको पता है, हमारा समाज मेहनत करके खाता है यानी मुफ़्तखोर नही है। कपड़ा बुनना हमारा पुश्तैनी पेशा है...और बहुत–बहुत साधुवाद आपके अंग्रेज भाईयों का, जिन्होंने सिंधु सभ्यता को खोज निकाला और उसमें भी कपड़ा निकला, यानीं कि हमारा समाज सैंधव काल में भी कपड़ा बुनता था। अगर हमारा समाज कपड़ा न बुनता, तो क्या आप सब लोग कपड़े पहने बैठे होते।

(हॉल की तरफ हाथ घुमाकर कहती है)

दरअसल अच्छी बातों का प्रचार–प्रसार नहीं हो पाता है। हम गलत परम्पराओं को भी बिना अकल लगाये मानते चले जाते हैं। जैसी एक कहावत है– 'जो जीता वो सिकन्दर।' अरे

भई, सिकन्दर अंततः कहाँ जीता, उसके उत्तराधिकारी ने तो चंद्रगुप्त मौर्य को दामाद बनाया यानी जो जीता वह चन्द्रगुप्त मौर्य और साहब, यहाँ की तो परम्परा है, दामाद और जीजा बनाकर बेईज्जती करना। जनरल साहब, आपके पास तो गोरी–गोरी मेम हैं, इसलिये यहाँ के लोग आपको दामाद...जीजा नहीं बना पाये। इतिहास गवाह होगा, जीजा की बेइज़्ज़ती का...

(इस समय लाईट का फोकस डॉ.आंबेडकर की फोटो पर जायेगा)

हमारे पुरखे सम्राट अशोक महान का जितना बड़ा साम्राज्य था, उतना बड़ा साम्राज्य होना, अब तक एक सपना ही है।

पता है जनरल, हमारी महारानी हम लोगों को कहानियाँ सुनाती थी, कि एक बहादुर महिला राजमाता जीजाबाई थीं, जिन्होंने अपनी तलवार और कूटनीति के बल पर अपने बेटे शिवबा को प्रजा प्रतिपालक राजा छत्रपति शिवाजी महाराज बनाया।

(शिवाजी का संगीत बजेगा)

वही कहीं दूर सावित्रीबाई फुले हुई हैं, जिन्होंने फातिमा शेख के साथ मिलकर लड़कियों के 18 स्कूल हम जैसों के लिये खोले। काश! कोई इधर भी लड़कियों के स्कूल खोलता, तो हम अनपढ़ न होते।

(सावित्रीबाई फुले का संगीत बजेगा)

जनरल, अब आप सोच रहे होंगे, कि मैं कितनी बहादुर हूँ, हमारी रानी साहिबा ने बहुत से नाम बताये हैं...अहिल्याबाई धनगर होलकर, अबंतीबाई लोधी, महाबीरी बाल्मिकी, आशादेवी गुर्जर, ऊदा देवी पासी, ताराबाई शिंदे भोसले...जिन्होंने आपके अंग्रेज बंधुओं के छक्के छुड़ाये।

जनरल, हमारा समाज बहुत बड़ा है। देश के किसी कोने में जाओगे, तो ये अलग–अलग नाम से मिलेगा। जैसे– कोरी, कोली, मल्हार, तांती, पान, स्वांसी, पटवा, कबीरपंथी, जुलाहा, भगत, तंतुवाय, बुनकर, मलवसा, तलपदा, टोकरे, गंगामत, कोट्टा, मच्छीमार, मुटियार और बहुत से नामों से जाना जाता है। कितनी हैरानी की बात है, कि इन महान नागवंशियों को वंचित वर्ग में परिवर्तित कर दिया गया। क्योंकि इस समाज ने अपनी ताकत को पहचाना ही नहीं।

(अतीत में सोचने लगती है, झलकारी पर लाईट कम होने लगती है। झलकारी साइक में ग्रामीण कास्ट्यूम बदलने चली जाती है और जनरल के Banner पर लाईट है। जनरल की Recorded Voice गूँजती है।)

(जनरल रोज की आवाज़– ''नो स्टुअर्ट नो...शी इज नॉट मैड, इफ वन परसेंट ऑफ इण्डियन वीमेन बिकम सो मैड एज डिस गर्ल इज, वी विल हैव टू लीव ऑल डैट वी हैव इन डिस कंट्री।'' ''नहीं स्टुअट नहीं....यह पागल नहीं, अगर इस डेश की एक फीसडी महिलाएं इस लड़की (झलकारीबाई) की तरह आजाडी की दीवानी हो गई तो हम सबको यह डेश चोड़कर हाथ जाड़कर बागना परेगा।'')

Fade Out....

–: द्वितीय दृश्य :–

(चिड़ियों की चहचहाट से सबेरा होता है...झलकारी देहाती कुर्ती, लहंगा पहने, चोटी बनाये झाड़ू लगाती हुई, मंच पर आती है। चारपाई खड़ी करके एक तरफ रखती है। मोढ़ा सेट करती है और दर्शकों से मुखातिब होती है)

झलकारी – मेरा नाम झलकारी है, मेरी माँ का नाम धनियाँ और बापू का नाम मूलचन्द है। मेरा जन्म 22 नवम्बर 1830 को, इसी झाँसी के बालाजी मार्ग पर स्थित भोजला गाँव में हुआ है। मैं अपने अम्मा–बापू की इकलौती और बेहद लाड़ली हूँ। इसीलिये बचपन में मेरे पिता अपने कंधों पर बैठाकर गढ़पहरा के मेले में ले जाते थे। वहाँ के चाट–पकौड़ी, जलेबी का स्वाद याद करके मुँह में पानी आ गया। (मुँह में खटाई जैसा चटकारा लेती है)

बहादुरी के काम करना मुझे अच्छा लगता है। एक शाम पड़ोस की कुछ महिलाओं के साथ कुएं पर पानी भरने गई थी। एक महिला के साथ उसका तीन साल का लड़का भी था। महिलाएं पानी भर चुकी थीं और आपस में बतिया रहीं थीं। बालक सबकी नज़र बचाकर उत्सुकतावश मुंडेर पर चढ़ा और कुएं के भीतर झाँकने लगा। किसी भी महिला का ध्यान उस तरफ नहीं गया। इसी बीच अचानक उसका संतुलन गड़बड़ाया और वह कुएं के भीतर जा गिरा। चारों तरफ चीख पुकार मच गई। औरतें बद्हवास घबराकर चीखने–चिल्लाने लगीं। क्योंकि वहाँ सभी औरतें ही थीं। इसलिये बालक को भीतर से बाहर निकाल लाने का साहस किसी में न था। आस–पास कोई पुरुष भी मौजूद नहीं

था। कुआँ कोई अस्सी हाथ गहरा था। तभी मैं चिल्लाई, 'मुझे बाल्टी में बिठाकर कुएं में उतारो। और मैं उस काले–गहरे पाताल में बेखौफ उतर गई। बच्चा अभी भी बचने की कोशिश में लगा था। मैंने उसे खींचकर गोद में उठा लिया। महिलाओं ने धीरे–धीरे रस्सी खींची। इस प्रकार मैं बालक को बचाकर बाहर आ गई। सभी ने राहत की साँस ली। मेरे साहस की यह घटना पूरे गाँव में चर्चा का विषय बन गई। (गर्व से इठलाती है)

एक बार मैं अपनी सहेलियों के साथ बेतवा नदी के घाट पर नहाने उतरी। बरसात का मौसम होने के कारण नदी में पानी बढ़ा हुआ था। एक सहेली का पैर फिसला और वह गहरे पानी में जा गिरी। उसने बाहर निकलने के लिए बहुत हाथ–पैर मारे, मगर सब बेकार। अब वह नदी की धारा के संग–संग बहकर जाने लगी। किसी की भी हिम्मत उसे निकाल पाने की नहीं हो रही थी। होती भी कैसे...बेतवा नदी का बहाव ही इतना भयंकर था। मैंने सोचा, यदि उसको जल्दी न बचाया गया, तो डूब कर मर जाएगी। हो सकता है कि उसकी लाश भी न मिले। मैं झट से उसकी तरफ कूदी और तेजी से तैरती हुई उसे खींच कर बाहर ले आई और बचा लिया।

एक बार हमारे गाँव के मुखिया के घर को जब डाकुओं ने घेर लिया था, तब छत से कूदकर मैंने डाकुओं के छक्के छुड़ा दिये थे। (ढिशुम–ढिशुम का एक्शन करती है)

इसीप्रकार से एक बार मैंने भीषण आग में कूद कर दो मासूम बच्चों की जान बचाई थी।

एक रोज की बात है, मैं जंगल से लकड़ियाँ बीनकर ला रही थी। तभी एक आदमखोर तेंदुए ने मेरे ऊपर हमला कर दिया। (झपटने का एक्शन करती है) तेंदुए से बचने की जद्दोजहद में मैं बुरी तरह से जख़्मी हो गई थी। फिर भी हिम्मत नहीं हारी। मैंने लपककर लकड़ी काटने वाली कुल्हाड़ी उठायी और तेंदुए के सर पर अंधा–धुंध प्रहार करने शुरु कर दिए। तेंदुए को ऐसे भयंकर हमले की उम्मीद नहीं थी, वह बौखला उठा। गुस्से में वह दहाड़ा ज़रुर, मगर आक्रमण करने की हिम्मत न बटोर सका। उसका सिर, नथुने और दाँत बुरी तरह जख़्मी हो चुके थे। ऐंसे में वह अपनी जान बचाने के लिए दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ। (अपनी बांह के डोले दिखाती है)

(हल्का सा शहनाई का संगीत, यादों में खोती है)

जीवन बड़ी ही मस्ती में बीत रहा था। झाँसी के नए पुरा के कोरी टोला में एक साहसी नौजवान पूरन था। छोटी अवस्था में ही उसने अखाड़ों में शारीरिक कौशल को

सीख–सीख कर काफी महारत हासिल कर ली थी। दूर–दूर तक दंगलों में पूरन का नाम था। वह कुश्ती में ही पारंगत नहीं था, बल्कि उसे लाठी, तलवार और घुडसवारी में भी महारत हासिल थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के पति राजा गंगाधर राव ने राज्य का आशिर्वाद प्राप्त सभी दस्तकारों को किले के भीतर बसने के लिए स्थान दिया हुआ था। इन दस्तकारों में कपड़ा बुनने वाले, चमड़े का कार्य करने वाले, लोहे का कार्य करने वाले, सोने, चांदी, तांबे के कारीगर, हाथी दाँत के कारीगर, कुंभकार, बढई, राजगीर, मीनाकार वगैरह सभी तरह के लोग थे। इन्हीं की इस बस्ती को नयापुरा का नाम मिला था।

पूरन के पिता अपने बेटे की तरक्की व ख्याति से बेहद खुश थे। वे अपने बेटे के लिए ऐसी ही हृष्ट–पुष्ट, सुन्दर और साहसी वधु चाहते थे। उन्होंने मेरे साहस के किस्से सुन रखे थे। अतः उन्होंने भोजला गाँव के अपने एक पुराने मित्र से अपने दिल की बात कही। मित्र ने बात आगे बढ़ाई और पूरन से मेरा रिश्ता पक्का हो गया।

पूरन ने मेरे भीतर की साहसिक प्रतिभा को घर–गृहस्थी की भेंट नहीं चढ़ने दिया और न ही मुझे एक बच्चे जनने वाली मशीन बनने दिया। क्योंकि उस समय नारी का काम घर–आँगन बुहारने, चूल्हा फूंकने और वंश बेल बढ़ाने तक ही सीमित था। धीरे–धीरे पूरन ने मुझे लाठी, तलवार और घुड़सवारी में माहिर बना दिया।

गंगाधर राव की मृत्यु के बाद रानी ने झाँसी की व्यवस्था स्वयं संभाली। रानी के शासन संभालते ही झाँसी के अंग्रेजों द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी सदाशिव राव ने झाँसी पर आक्रमण कर दिया। ऐसे भयानक हालातों को देखते हुए रानी को अधिक से अधिक सेना की ज़रुरत थी, क्योंकि उन्हें न केवल झाँसी के गद्दार सामंतों से निपटना था, बल्कि अंग्रेजों से भी दो–दो हाथ करने थे। क्योंकि लक्ष्मीबाई एक बहादुर और दूरदर्शी नारी थी, अतः उन्होंने अपनी रियासत की आधी आबादी यानी नारी समाज को भी सेना में शामिल करने का निर्णय लिया।

(दुर्गादल और उसकी सेनापति)

महिला दल के गठन का जब रानी लक्ष्मीबाई के मन में ख़्याल आया, तब उनकी दृष्टी वंचित समाज की तरफ ही गई। क्योंकि इसी समाज की महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया करती थीं। उन्हीं के बाजुओं में मर्दों जैसी ताकत हुआ करती थी। क्योंकि इस समाज की महिलाएं ही पत्थर तोड़ने से लेकर मिट्टी उखाड़ने तक तथा बोझा ढोने तक का काम किया करती थीं।

रानी ने अपने सिपहसलारों से अपनी इच्छा बताई और वंचित समाज में से वीरांगनाओं की भर्ती करने का आदेश दिया। सिपहसलारों ने बताया कि यह काम पूरन

कोरी ज्यादा अच्छे तरीके से कर सकता है, क्योंकि वह न केवल वंचित समाज से संबंधित है, बल्कि झाँसी रियासत का कुशल सैन्य अधिकारी भी है। यही नहीं, उसने पहले ही अपनी पत्नी को सैनिक शिक्षा दे रखी है। यह सुनकर रानी को बेहद सुखद आश्चर्य हुआ। रानी ने पूरन को पत्नी सहित हाजिर हाने का आदेश जारी किया।

अगले दिन जब हम अपने पति के साथ रानी के सामने उपस्थित भये।

हमने कई– ''महाराज! मोरे घर में पुरिया पूरबे को और कपड़ा बुनबे को काम होत आओ. ..लेकिन इनने अब जू काम कम कर दओ है। मलखंब, कुश्ती और जाने का का करन लगे। अब सरकार घर कैंसे चले?''

का कई...हमाई जात में और कित्ते लोग मलखम्भ और कुश्ती में ध्यान देत हें..??''

''काये हम का घर–घर देखत फिरत?''

''महाराज...मैं चकिया पीसत हौं। दोय–दोय, तीन–तीन मटकन में पानी भर भर ले आउत, भोर रांटा (चरखा) कातत।''

''सरकार...मोंसे अपराध हो गओ। हम हर साल आत हते, लेकिन जा साल नई आय पाये, तुमने बुलाओ तब याद आयी।''

सरकार...एक कहानी सुनाये...सुनाये!

एक दांय जे बाहर से आये, बोले–''अब इतैं से भागने परहे।''

हमने कईं– ''हम तो हियईं रययें, तुम जाय कें कऊ जा दुकौं।''

और जे एक लोटा पानी लेके एक खंड़हरा में जाये के दुक गये। थोड़ी देर में दरवाज़े के सामने घोड़ा की टाप सुनाई दई। झांक के देखो, तो बिना सवार को बढ़िया घोड़ा। जीन लगाम समेत। हम समझ गये कि सवार मारो गओ और घोड़ा भाग खड़ो भओ। हमने घोड़ा को पकरो और घर के पास वाले पेड़े से बांध दओ।

थोड़ी देर बाद घोड़ा पर बैठे और बड़ी ऐंठ के साथ अंग्रेजी छावनी की ओर चल दी। साथ में कोई हथियार न लिया, चोली में केवल एक छूरी रख ली। थोड़ी दूर पर गोरन का पहरा मिलो। टोकी गई। कहाँ.......

हमने कई–''हम तुम्हारे जंडले के पास जाउता है।''

गोरा बौला – ''कौन..?''

''झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई।'' (छूरी से काल से) और अंग्रेजन ने हमें फेर लओं।

तो महारानी मुझे देखते ही रह गईं। सिर्फ एक रंग का ही फर्क था। रानी गौर वर्ण थी, जबकि मैं सांवली थी। बाकी नैन–नक्श, कदकाठी में बिलकुल रानी से मिलती–जुलती थी। मेरे चेहरे पर विरोचित तेज को महारानी ने तुरन्त पहचाना। आखिर एक जौहरी ही खरे सोने की पहचान कर सकता है। रानी, मेरे पति की वीरता, साहस एवं युद्ध कौशल से भली–भाँति परिचित थीं, लेकिन मेरे युद्ध कौशल को देखने के लिए बड़ी उत्सुक थीं। वे परखना चाहती थीं, कि मैं युद्धकला में कितनी पारंगत हूँ। रानी के कहने पर मैंने अपना युद्ध कौशल दिखलाया। (औजार चलाने का एक्शन करती है) महारानी बेहद प्रभावित हुईं। जैसे मुँह माँगी मुराद मिल गई हो और मुझे सीने से लगा लिया। सुन्दर साड़ियाँ और सोने के कंगनों की भेंट दी तथा गाँव–गाँव जाकर वंचित वीरांगनाओं को भर्ती करने के लिए उचित आर्थिक सहायता भी दी। शीघ्र ही कोरी, चमार, दुसाध, मेहतर, डोम, नट आदि अलग–अलग वर्गों में बाँटे गए वंचित समाज की साहसिक वीरांगनाओं की एक बड़ी संख्या जुटा ली और रानी साहिबा के समक्ष प्रस्तुत किया।

सभी महिलाओं का पंजीकरण किया गया और एक राजाज्ञा द्वारा इस महिला दल की सेनापति मुझे घोषित किया गया और सैनिक शाखा की जिम्मेवारी सौंपी गई, क्योंकि मैं पहले से ही प्रशिक्षित थी।

सुबह चार बजे से ही इस अभ्यास में झोंक दिया जाता। महारानी अपनी दिनचर्या का कुछ न कुछ समय निकाल कर इस अभियान के लिए ज़रुर लगाती। सभी ने तीर, तलवार, भाला तथा बन्दूक चलाने के साथ–साथ घुड़सवारी में भी दक्षता प्राप्त कर ली थी। नजदीक से आक्रमण करने, ढाल का इस्तेमाल कर शत्रु के आक्रमण को विफल करने, दूर से शत्रु पर हवा में घुमा कर भाला फेंकने....यानी हाथ अब हथौड़े में तब्दील हो गए थे। और एक साहसी, मजबूत एवं कुशल महिला सैनिक टुकड़ी तैयार हो गई, जिसका नाम दुर्गा दल रख दिया गया।

(युद्ध की घोषणा)

आखिर वह दिन भी आ गया जिसके लिए दुर्गा दल का गठन किया गया था। युद्ध की रणभेरी बज उठी। (रणभेरी का संगीत) सभी वीरांगनाएं तो युद्ध का बड़ी ही बेसब्री से इंतजार कर रही थीं। 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से विद्रोह की चिंगारी फूटी और

देखते ही देखते सारा देश बारुदी सुरंग की तरह भड़क उठा। झाँसी के इतिहास में यह बड़ा ही नाजुक समय था। विपत्ति की इस घड़ी में पूरन कोरी और भाऊ बख्शी जैसे वंचित जाँबाज सीना तान कर आ जुटे। क्रांतिकारीयों की हुंकार को देखते हुए अंग्रेजों को दुम दबा कर भागना पड़ा। अब झाँसी की शासन व्यवस्था रानी लक्ष्मी बाई के हाथ में आ गई। पहली परीक्षा में दुर्गा दल सफल हुआ था। लेकिन असली परीक्षा की घड़ी अभी आनी बाकी थी। वह घड़ी आई 6 जून, 1857 को। इस दिन झाँसी में विद्रोह भड़क उठा। इस बीच अंग्रेजों के पिट्ठू कोतवाल नीलधर और मदार बख्श आदि पकड़ लिए गए थे।

युद्ध अपने भीषण दौर पर पहुँच चुका था। किले के भीतर भी और बाहर भी मार काट मची हुई थी।

—: तीसरा दृश्य :—

(पकड़ो, मारो...की आवाज़ें—(**Narration**) ''तलवारों की खनक, बारुद के धमाके, हाथियों की चिंघाड़े, घोड़ों की हिनहिनाहटें, कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें....'')

(हाथ में बन्दूक लेकर सैनिक के परिधान में आ जाना है)

(तिलमिलाई हुई अंग्रेजी सेना पर घायल शेर की तरह चारों तरफ से झपटी और चिल्लायी—)

''दक्षिणी फाटक की कमान खुदाबख्श के हाथों में दे दो। उत्तरी फाटक पूरन और मेरे 'दुर्गा दल' के कब्जे में रहेगा। अंग्रेजों को गुप्त सूचना मिल चुकी है कि दुर्गा दल नया—नया दल है। यही वजह है कि अंग्रेजों ने अपनी सारी ऊर्जा उत्तरी फाटक में झोंक दी है।

''शाबाश! दुर्गा दल की शेरनियों गोरों को सिर उठाने का मौका मत देना, जिसका भी सिर उठे, उधर गोलियों की बौछार कर दो। देखो, वो....देखो...अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ रहा है। उत्तरी फाटक के एक सुरक्षित कोने पर पूरन ने आड़ ले रखी है...इधर दूसरे कोने पर मैं हूँ। लगी रहो शेरनियों......

(गाल पर उंगली रखकर सोचती है...और अपने सैनिकों में हौसला बढ़ाने के लिये कमेंटरी भी करती जा रही है)

लगता है अंग्रेजों ने अब नई रणनीति सोची है, इसलिये वे तीन दलों में बंट गए...हूँ....एक दल सबसे पीछे दूर से कई तोपों द्वारा बारुद दाग रहा है। दूसरा दल बंदूकों से लैस है, गोलियों की दनादन बौछार कर रहा है। अच्छा......अंग्रेजों के ये दोनों दल अपने तीसरे दल को 'कवर' दे रहे हैं। जो रस्से और सीढ़ियाँ लेकर तलवारों, बंदूकों से लैस होकर किले पर चढ़ जाने के लिए आगे बढ़ रहा है। लेकिन मैंने भी चप्पे—चप्पे पर सैनिकों को लगा

रखा है। सैनिकों के हौसले के आगे दुश्मनों की एक नहीं चल पा रही है। जो भी गोरा रस्से के सहारे किले पर लटकने की कोशिश कर रहा है, वह पके आम की तरह टपका दिया जा रहा है। वो देखो, सीढ़ी किले की दीवार से छूई और तुरन्त चढ़ने की कोशिश करने वाला गोरा औंधे मुँह लुढ़का दिया गया। लेकिन ये क्या..?? (सोचती है) किले पर दबाव बढ़ता जा रहा है। बाहर से हज़ारों की संख्या में अंग्रेज सिपाही चले आ रहे हैं। चारों तरफ से गोला–बारुद बरसने से भयंकर आग लग सकती है, उसके बाद तो अंग्रेजी सेना का किले के भीतर घुस जाना लगभग तय है। (साईक की तरफ देखकर) क्या... महारानी में रात के भोजन के बाद एक गुप्त सभा बुलाई है..?

(महारानी की मिटिंग में साइक की तरफ बोलती है।)

जी...जी महाराज, जैसी सुचनाएँ गुप्तचरों से मिली हैं, उनके अनुसार तो सुबह का सूरज निकलते ही किले पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का झण्डा फहर जाएगा। ऐसे में सभी बिंदुओं पर जब विचार हो चुका है, तो नाना भोपटकर ने सलाह दी है, कि महारानी को किसी भी सूरत में अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को लेकर किले के गुप्त द्वार से बाहर निकल जाना चाहिए। लेकिन सेना के किसी भी सदस्य को कानों–कान खबर नहीं होनी चाहिए, कि रानी साहिबा यहाँ नहीं हैं, नहीं तो उनका मनोबल टूट जाएगा। तय हुआ है कि मैं आपकी गैर–हाजिरी में महारानी के भेष में किले के भीतर रहूँ। अपने कमरे में चलिये महारानी, जिससे मैं आपका लिबास पहन लूँ और आप मेरा लिबास पहन लीजिये।

–: चौथा दृश्य :–

(साईक में जाकर राजसी पगड़ी, लहंगा, गाउन, चुनरी पहन लेती है..)

चलिये महारानी, (हाथ से ईशारा करती है) गुप्त द्वार के बाहर आपका प्रिय घोड़ा तैयार खड़ा है। जाओ....सभी लोग रानी को गुप्त द्वार तक छोड कर आओ। (अब महाराजा कुर्सी पर बैठना है और महारानी वाला एटिट्यूड) हू..ऽऽ....किले में तैनात सैनिक मुझे महारानी समझकर सम्मान में झुक रहे हैं। (दर्शकों की तरफ देखकर) गुप्त द्वार के बाहर रानी का प्रिय घोड़ा है। महारानी दामोदर राव को चादर से पीठ पर बांधकर घोड़े पर सवार हो जायेगी। बाहर अंधेरा काबिज होगा...चारों तरफ सन्नाटा पसरा होगा। आखिरी बार किले को देख कर, किले की रक्षा करने को कह रही होंगी। हाँ...हाँ 'रानी सा' मैंने आपको वचन दिया है– ''हम मरते दम तक किले की हिफाज़त करेंगे। गोरों को हमारी लाशों के ऊपर से लांघ कर आगे बढ़ना होगा।'' घोड़ा जंगल की ओर मुड़ा होगा और चार छलांगों में ही घुप्प अंधेरे में कहीं गायब हो गया होगा। अब किले का सारा भार मेरे कंधों पर है।

(इसी बीच फिर गोलाबारी शुरु होती है....और थम जाती है।)

(सबेरा होता है, चिड़ियों की चहचहाट...)

यह क्या....सबेरे–सबेरे ही अंग्रेजी सेना ने किले को चारों तरफ से घेरकर गोलीबारी शुरु कर दी। (मन में) रानी के भेष में मुझे भी अपनी सेना की बागड़ोर संभाले रखनी है। (आदेश) अंग्रेजों को अधिक से अधिक समय तक लड़ाई में उलझा कर रखा जाए, ताकि रानी लक्ष्मीबाई बिठुर के सुरक्षित स्थान तक पहुँच जाए।

(लेकिन तभी एक गोली पूरन कोरी के छाती पर लगी) देखो, तुम्हें कुछ नहीं होगा पूरन, मैंने तुम्हें सुरक्षित आड़ में पहुँचा दिया है..(तभी और गोलियाँ चलती हैं) मैंने उस सैनिक जत्थे को ढ़ेर कर दिया पूरन, जिनकी बन्दूकों से निकली गोली से तुम घायल हुए थे। इनकी तबियत को क्या हुआ, अरे.....पूरन की गर्दन तो एक और लुढ़क गई...अलविदा पूरन! (सैल्यूट करती है) वे शहिद हो चुके हैं। (देखकर सन्न रह गई, अपनी नसें टटोलती है) जैसे नसों में खून ही नहीं बचा है। (आँखों से आँसुओं का एक सैलाब उमड़ उठा....फफक कर रोने लगी।) (फिर याददाश्त लौटती है) अरे...मैं भूल ही गई कि ये रणक्षेत्र है। (तभी कुछ ही दूर फटे एक बारुद के गोले से पुनः अपनी स्मृती में लौटी) पति के हत्यारे अभी जिंदा हैं। मेरे रहते यदि वे जिंदा बच गए तो फिर पति की शहादत का अपमान हो जाएगा। (फिर भयंकर गोलाबारी होती है) अंग्रेज तो अब भी मुझे रानी लक्ष्मीबाई ही समझ रहे हैं। मुझे ज़िन्दा पकड़ना चाहते हैं। (पास में रखे हुए जाल को ओढ़ लेती है) अब मुझे दबोचने से कुछ नहीं होगा। अंग्रेजों की गिरफ़्त के बावजूद मन ही मन बहुत खुश हुँ, क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई कब की अपनी सुरक्षित जगह पर पहुँच चुकी होगीं। जाओ गोरे सैनिकों, अपने जनरल रोज को सूचना दे दो, कि रानी लक्ष्मीबाई पकड़ी गई है। उसने युद्ध विराम की घोषणा कर दी। मुझे गिरफ़्तार करके जनरल रोज के शिबिर में ले जाया जाय। जिससे वह मेरे तेजस्वी ओज को एक टक निहार सके। (दर्शकों से) तुम लोग देख रहे हो...मेरे चेहरे पर किसी किस्म का भय नहीं है, क्योंकि हम इस देश के मूलनिवासी हैं. ...शासक हैं....जुल्मी जब–जब जुल्म करेगा....(गोलियों, तोपों की गड़गड़ाहट शुरु....धीरे–धीरे शांत...)

लेखक : ए.के.सिंह
मोबा : 7355175480
लखनऊ / मुम्बई

।। समाप्त।।

(नोट : नाटक श्रद्धेय शांतिस्वरुप बौद्ध जी को समर्पित करना है)